विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग-दशम्

विषय-हिन्दी

।। अभ्यास-सामग्री ।।

आज की कक्षा में हम

पाठ-सूरदास के पद का समापन करने जा रहे हैं और कल से हम एक नये अध्याय की शुरुआत करने जा रहे हैं .....

सूरदास के पद का शेष प्रश्नोत्तर

सूरदास के पद के अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1:गोपियों ने उधव को बड़भागी क्यों कहा है ?

उत्तर-:गोपियों ने उधव को इसलिए बड़भागी कहा है क्योंकि उधव श्री कृष्ण के प्रेम से दूर हैं उन्हें कृष्ण का प्रेम अपने बंधन में न बांध सका ऐसे में उधव को प्रेम की वैसी पीड़ा नहीं झेलनी पड़ रही है जैसी गोपियां झेलने को विवश हैं ।

प्रश्न-2: 'गुर चाँटी ज्यों पागी' कहने से गोपियों की किस मनोदशा की अभिव्यक्ति होती है

उत्तर-:'गुर चाँटी ज्यों पागी' से गोपियों का कृष्ण के प्रति एक निष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति का ज्ञान होता है। गोपियों की मनोदशा ठीक वैसी ही है जैसी गुड़ से चिपटी चीटियों की होती है जिस तरह चीटियां किसी भी दशा में गुड़ को नहीं छोड़ना चाहती हैं उसी प्रकार गोपियां भी कृष्ण को नहीं छोड़ना चाहती हैं।

प्रश्न-3: गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी कहने के समान क्यों बताया है

उत्तर-: गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के सामान इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार हारील पक्षी अपने पंजे में दबी लकड़ी को आधार मानकर उड़ता है उसी प्रकार गोपियों ने अपने जीवन का आधार कृष्ण को मान रखा है।

प्रश्न-4: ऐसी कौन सी बात थी जिसे गोपियों को अपने मन में दबाए रखने के लिए विवश होना पड़ा

उत्तर-: गोपियां चाहती थी कि श्री कृष्ण के दर्शन करें और अपने प्रेम की अभिव्यक्ति उनसे करें वह इन बातों को उधव से नहीं कर सकती थी यही बात उनके मन में दबी रह गई ।

प्रश्न-5: कमल के पत्ते और तेल लगी गागर की क्या विशेषता होती है

उत्तर-: कमल का पत्ता इतना चिकना होता है कि पानी की बूंद उस पर ठहर नहीं सकती है इसलिए कमल का पत्ता पानी में रहने पर भी गिला नहीं होता है इसी प्रकार तेल लगी गागर को जब पानी में डुबोया जाता है तो उसे भी पानी छु नहीं पाता है और वह सुखी की सुखी रह जाती है ।

प्रश्न-6: गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है। आपकी दृष्टि से उनका ऐसा कहना कितना उपयुक्त है

उत्तर-: गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है पर मेरी दृष्टि में ऐसा नहीं है गोपियां कृष्ण से दूर रहकर भी उनके प्यार में अनुरक्त हैं वे स्वयं को कृष्ण के प्रेम बंधन में बंधी पाती हैं जिसे कृष्ण से इस तरह का प्रेम मिल रहा हो वह अबला और भली नहीं हो सकती है

प्रश्न-7: 'प्रीति नदी में पाँव न बोरयो' का आशय स्पष्ट कीजिए। ऐसा किसके लिए कहा गया है?

उत्तर-: 'प्रीति नदी में पाँव न बोरयों' का आशय है कि प्रेम रूपी नदी में पैर न डुबाना अर्थात किसी से प्रेम ना करना और प्रेम का महत्व ना समझना ऐसा उधव के लिए कहा गया है जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम से अछूते बने रहें।